

प्राचीन विश्व युद्ध के कारण पर प्रकाश डालें।
उत्तर - 1939 ई से 1945 ई तक हुए विश्व युद्ध के निम्नलिखित
कारण थे -

① वर्साय की संधि - प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी के साथ वर्साय की संधि हुई थी। जिस द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण माना जाता है। वर्साय की संधि ऐसा प्रतीत होता है कि शांति की संधि नहीं अपितु बीस वर्षों के लिए युद्ध प्रिय की संधि थी। प्रथम विश्व युद्ध में संलग्न दोनों पक्षों की अमानतों की पूर्ति नहीं हो सकी। साथ ही उत्पन्न द्वितीय विश्व युद्ध का प्रत्यक्ष कारण मिस-राष्ट्रों द्वारा अक्षर बर्ताना का प्रयत्न करने हुए जर्मनी के साथ की गयी विश्व संधि ने जर्मनी को संतुष्ट करने एवं मिस-राष्ट्रों से प्रतिशोध लेने के लिए बाध्य किया। इसी कारण द्वितीय विश्व युद्ध को अनिवार्य युद्ध कहा जाता है।

② फलान्दी : - प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व यूरोप दो अलग-अलग खंडों में विभक्त हो गया था। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व भी यूरोप दो भागों में विभक्त हो चुका। द्वितीय विश्व युद्ध में एक ओर जर्मनी, इटली व जापान ने जिन्हे दूसरी शक्ति मानते थे। दूसरी शक्ति वर्साय की संधि की कोटी तथा अमानतों की समर्थक थी। दूसरी ओर मिस-राष्ट्रों में फ्रांस, पोलैंड, चेकोस्लाविया, यूनान, ग्रीस, रूस, आदि शामिल थे।

③ संश्लेषण : - 1919 ई की वर्साय की संधि के बाद जर्मनी को निर्बल बनाने के उद्देश्य से उत्पन्न निःशक्तिता कर दिया गया था। इसके बाद भी फ्रांस का जर्मनी के प्रति मन कम नहीं हुआ। अतः वह अलग-अलग करने लगा। 1933 ई में जर्मनी ने हिलर-शक्ति में काम कर हिलर ने वर्साय की संधि को अक्षर बर्ताना करके अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि करवा चुका कर दिया। उसने सैनिक सेवा अग्रिम की तथा धनराशि के उत्पादन को बढ़ाया। एसी स्थिति में युद्ध का होना संभावित था।

④ संघ संघ की निर्बलता : - प्रथम विश्व युद्ध के बाद पारस्परिक समझौतों को अक्षर बर्ताना एवं वे सुलझाने के उद्देश्य से एक अन्तराष्ट्रीय संस्था संघ संघ की स्थापना की गयी थी। किंतु संघ संघ अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। अनेक संघ संघ संघ से अलग होने लगे। किंतु संघ संघ को देशों के विरुद्ध कार्यवाही नहीं कर रहा था। इससे स्पष्ट हो गया था कि संघ संघ की निर्बलता हो गई थी।

⑤ साम्राज्यवाद : - प्रथम विश्व युद्ध का भी एक प्रमुख कारण साम्राज्यवाद था। विश्व युद्ध के बाद भी साम्राज्यवाद की

मावना समाप्त नहीं हो सकी गर्मी और इतनी संघि का विरोध करने हुए अपनी गलतियों को बसाने के लिए उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हो गये। जापान की इस साम्राज्यवादी नीति का समर्थन था तथा उसकी दृष्टि चीन पर लगी थी जो देशों की साम्राज्यवादी नीति इंग्लैंड व फ्रांस के हितों से टकरा रही थी। अतः युद्ध का होना आवश्यक भी था।

(6) नागाशाही का उदय :- द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व अरोंप के नाममात्र देशों में नागाशाही का शासन स्थापित हो चुका था। गर्मी के नाममात्र शासन के शासन की असमर्थता के बाद नागो दल का नेतृत्व हिलर शक्ति में आया। इसका प्रमुख उद्देश्य वर्साप की संघि की अवहेलना करके गर्मी के खीमे हुए समाज को पुनः प्राप्ति की इतली में पुनर्स्थापित नामक नागाशाही शक्ति का भी उदय हुआ। जिसने काशीवाद की स्थापना करने में समर्थता प्राप्त की थी। इस प्रकार किन्तु देशों में नागाशाही का उदय होना युद्ध का स-प्रभाविक प्रभाव दिया था।

(7) दो विचारधाराओं का संघर्ष :- द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व में दो प्रकार की विचारधाराएं प्रचलित थी। गहनतात्मक एवं एकतात्मक। एक तो विचार था। गहनतात्मक विचारधारा के समर्थक ने इंग्लैंड फ्रांस और अमेरिका पर ही कुलरी इतली, गर्मी, एवं जापान एकतात्मक विचारधारा के समर्थक थे। शीघ्र ही दोनों विचारधाराओं में संघर्ष शुरू हो गया। अतः दोनों ने निर्भीक होना निश्चित ही था। जिसका एक मात्र कारण युद्ध करना था।

(8) राष्ट्रीय साम्राज्यवाद :- गर्मी ने इस प्रकार की भावना जाग्रत हो गयी कि वे युद्ध जारी हैं। अतः गुटबानों में से एक होने के कारण उन्हें ही शासन करने का अधिकार प्राप्त है। यह राष्ट्रीय साम्राज्यवाद की भावना अविनाश में अत्यंत धार्मिक प्रभाव प्रभावित हुई। प्रथम विश्व युद्ध के बाद गर्मी को विभिन्न भागों में बांट दिया गया था। जिससे गर्मी अलग अलग राष्ट्रों के अधीन हो गया था। आस्ट्रिया-हंगरी, चेकोस्लोवाकिया तथा पोलैंड में रहने वाले गर्मी के कारण अत्यंत गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी। हिलर-विदेशों में रहने वाले गर्मी को गर्मी में मिलाना चाहता था। गर्मी ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शक्ति का सहारा लिया। फ्रांस व इंग्लैंड ने तुर्की के नीति के हान पर यदि इसी समय गर्मी को आस्ट्रिया पर अधिकार करने से रोकना होता तो संभवतः द्वितीय विश्व युद्ध नहीं होता।

(9) तुर्कीकरण की नीति :- जिस राष्ट्रों द्वारा नागाशाही के प्रति तुर्कीकरण की नीति के परिणामस्वरूप नागाशाही अत्यधिक

अस्थिरता होने पर गार और आगे चलकर विद्रोह का एक कारण बना। मित्रराष्ट्रों के द्वारा मुस्लीमों की नीति का पालन करने के कारण मित्रराष्ट्रों में आपसी झगड़ा का होना था इंग्लैंड और अमेरिका जर्मनी के प्रति उदासीन का व्यवहार करने वाले थे, क्योंकि उनका मन था कि कुछ प्रकार से व्यवहार करने पर अखिर में जर्मनी युद्ध नहीं करेगा। वह इंग्लैंड की वही सामानों की अत्यधिक मांग थी इसके अतिरिक्त इंग्लैंड को एक साम्राज्य के प्रति अर्थों संकित था तथा एक के साम्राज्य के दो कर्तों के लिए जर्मनी का उद्योग आर्थिक था। इंग्लैंड यूरोप के झगड़ों में पूर्ण पड़ना नहीं चाहता था। जर्मनी के प्रति कठोर नीति का पालन करना चाहता था इस प्रकार मित्रराष्ट्रों के आपसी मतभेद का लाभ उठाकर नाज़ी हिटलर और मुसोलिनी का उद्योग हुआ। हिटलर ने अखिर को अपने अधिकार में ले लिया, यॉर्कलोवाकिया में अपनी सेना को भेज दी। इटली ने भी अवीलीनिया पर अधिकार कर लिया। इंग्लैंड ने कोई कठोर कार्यवाही नहीं की। नाज़ी हिटलर ने गंदेबाकांसार मित्रराष्ट्रों की मुस्लीमों की नीति से बर्बरता की। अतः युद्ध का होना निश्चय हो गया।

(10) आज़ादी संग्राम :- इसकी साम्राज्य की नीति के कारण इंग्लैंड व एक के संबंधों में नकार उद्योग हो गया था। मित्रराष्ट्रों को एक पर विद्रोह होने के बाद अखिर सम्मेलन में भी एक को आमंत्रित नहीं किया गया था। इंग्लैंड एवं फ्रांस भी जर्मनी के विरुद्ध एक से संबंध करना चाहते थे, किन्तु एक की कुछ शर्तों के कारण इंग्लैंड स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। अतः एक जो पहले से ही मित्रराष्ट्रों से अप्रसन्न था, अब बहूत हो गया तथा उसके जर्मनी के साथ 1939 ई. में आज़ादी संग्राम कर लिया। जर्मनी को इसके अत्यधिक लाभ हुआ, क्योंकि इससे उसकी पूर्ण सीमा सुरक्षित हो गयी।

इस प्रकार अपनी स्थिति की दृष्टि बनाकर जर्मनी ने 1 सितम्बर 1939 ई. को पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। इंग्लैंड की सहायता पर इंग्लैंड व फ्रांस ने तथा जर्मनी की ओर से एक ने हथियार किया परमाणुका क्षीय विनाश युद्ध शुरू हो गया।

समाप्त